Dhanauri International Journalof Multidisciplinary Research (DIJMR)
Volume 1 Issue 1, August (2025)

हरिद्वार जनपद के ग्राम ईमली खेडा क्षेत्र के ऊनी वस्त्र उद्योग में कार्यरत् लोगों के आर्थिक व्यवसाय एवं ग्रामीण आजीविका का अध्ययन

(Study of Economic Occupation and Rural Livelihood of People working in Woollen Textile Industry of Imali Khera Village of Haridwar District)

1 Prof. (Dr.) Shreepal Chauhan and **2 Km. Sono Kumari**

1. **Prof. (Dr.) Shreepal Chauhan,** Research Supervisor & Dean (Sociology), Faculty of Arts, Humanities & Social Sciences, Motherhood University, Roorkee (UK).
2. **Km. Sono Kumari,** Research Scholar (Sociology), Faculty of Arts, Humanities & Social Sciences, Motherhood University, Roorkee (UK). **Email:** sonamsingh155255@gmail.com

---

अमूर्त (Abstract)

संसाधन उपयोग द्वारा आजीविका की आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही विकास की परिभाषा होती है। आर्थिक विकास की आवश्यकता समाज में व्याप्त बेरोजगारी और प्रवास (Migration) की समस्या के समाधान की आज आवश्यक्ता है। विकासात्मक गतिविधियों की क्षेत्रीय विषमताओं को दूर करने की। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि विकास प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, जंगल, जमीन और जैव–विधिवता पर ही आधारित हो सकता है। परन्तु आज विकास के नाम पर जो हो रहा है, वह सबके सामने है, जैसे केदारनाथ जल प्रलय की घटना और उत्तराखंड के अन्य क्षेत्रों में घटित हाल की घटनाओं ने इस बात के महत्व को पहले से भी ज्यादा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित और रेखांकित किया है। ऐसे में सवाल यह है कि विकास का अर्थ क्या है और विकास किसके लिए है ? सवाल यह भी है कि इस क्षेत्र के विकास की क्या रणनीति होनी चाहिए ? यह विकास पर्यावरण की कीमत पर नहीं आ सकता। क्षेत्र के आर्थिक विकास के साथ ही पर्यावरण की अति–संवेदनशीलता और भंगुरता के विशिष्ट खतरों (फ्रैजिलिटी) को संबोाधित करने की आवश्यकता होगी। पर्यावरण के अति–संवेदनशीलता और संरक्षण की आवश्यकता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। आज विकास के लिए वैकल्पिक विकास नीति (रणनीति) पर सोचने या विचार करने की आवश्यकता है, जो पर्यावरण के अनुकूल हो, जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एंव संर्वधन में सक्षम या समर्थ हो और जो स्थानीय समाज और संस्कृति के प्रति संवेदनशील हो।

मुख्य शब्दः– ऊनी वस्त्र उद्योग, आर्थिक व्यवसाय, ग्रामीण, आजीविका एवं स्थानीय संसाधन।

प्रस्तावना (Introduction)

इमलीखेड़ा की अवस्थिति 29° 90′ उत्तरी अक्षांश (Latitude) और 78° 13′ पूर्वी देशांतर (Longitude) पर स्थित है। अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड़ राज्य के हरिद्वार जपनद में रूड़की के उत्तर–पश्चिम में स्थित एक ग्राम है। यह ग्राम हरिद्वार तहसील के अंतर्गत आता है, और राष्ट्रीय राजमार्ग 334 (NH-334) के निकट स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से गंगाा द्वारा निर्मित मैदानी क्षेत्र है जिसे जलोढ़ मिट्टी के आधार पर बांगर क्षेत्र कहा जाता है। अध्ययन क्षेत्र की समुद्र तल से उँचाई लगभग 250 मी0 है। इमली खेड़ा हरिद्वार नगर से लगभग 20 किमी0 की दूरी पर स्थित है।

मानचित्रः 1– इमली खेड़ा की अवस्थिति

शोध अध्ययन के उद्देश्य एवं लक्ष्य (Aim and Objectives)

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र में शोधकर्ता ने जो मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य निर्धारित किये हैं वें इस प्रकार हैं–

1. ग्रामीण क्षेत्र में ऊनी वस्त्र उद्योग सम्बन्धी जानकारी अध्ययन करना।
2. ग्राम ईमली खेडा में स्थित ऊनी वस्त्र उद्योग की फार्म/मीलों का अध्ययन करना।

शोध विधि (Research Methodology)

किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध कार्य के प्रकृति एवं उद्देश्य के अनुसार विभिन्न प्रकार के आँकड़ों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रयोग किये गये अनेक प्रकार के आँकड़ों, विधियों तथा प्रौद्यौगिकी का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शोध कार्य में प्रयुक्त प्राथमिक आँकडों का प्रयोग किया गया है।

- **प्राथमिक आंकड़ें (Primary Data) क्षेत्रीय सर्वेक्षण (Field Survey):** प्राथमिक आंकड़ों का स्रोत फील्ड सर्वे (Field Survey), अवलोकन (Observation), साक्षात्कार (Interview) तथा प्रश्नावली (Questionnaire) है। आंकड़ों को एकत्रित करने हेतु प्रश्नवाली (Questionnaire) का उपयोग किया गया है। इन प्रश्नवालियों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक व्यवसाय तथा मानव जीवन, सामाजिक–संस्कृति तथा पर्यावरणीय तत्वों से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से ज्ञान, चेतना एवं व्यवहार के आधार पर उत्तरदाताओं की मनोवृत्ति को देखने का प्रयास किया गया है।
- **ग्रामीण क्षेत्र से ऊनी वस्त्र उद्योग सम्बन्धी जानकारीः** अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक व्यवसाय तथा मानव जीवन, समाज–संस्कृति, पर्यावरणीय तत्वों से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से ज्ञान, चेतना एवं व्यवहार के आधार पर उत्तरदाताओं की मनोवृत्ति को देखने का प्रयास किया गया जो कि निम्न है–

तालिकासंख्या–1: क्या ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक ऋण लिया है ?

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	15	75
2	नहीं	5	25
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–1 से स्पष्ट होता है, कि 75 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक ऋण लिया जाता हैं, जबकि मात्र 25 प्रतिशत लोगों द्वारा ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक ऋण नहीं लिया जाता हैं अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज लोग बैंक से ऋण लेने से डरते हैं।

तालिका संख्या–2: ऊनी वस्त्र में उद्योग में महिलाओं की भागीदारी है ?

क्र0सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	08	40
2	नहीं	12	60
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–2 से स्पष्ट होता है, कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता ऊनी वस्त्र उद्योग में महिलाओं की भागीदारी नहीं हैं। 40 प्रतिशत लोग ऊनी वस्त्र उद्योग में महिलाओं की भागीदारी हैं।

तालिका संख्या–3: ऊनी वस्त्र उद्योग आपको लाभ हो रहा है ?

क्र0सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	15	75
2	नहीं	5	25
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–3 से स्पष्ट होता है, कि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ऊनी वस्त्र उद्योग से लाभ हो रहा हैं, मात्र 25 प्रतिशत लोग को ऊनी वस्त्र उद्योग से लाभ नहीं हो रहा हैं अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज के कुछ लोग बैंक ऋण लेने से डरते हैं।

तालिका संख्या– 4: ऊनी वस्त्र उद्योग अन्य राज्यों को भेजा जाता है ?

	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	13	65
2	नहीं	07	35
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–4 से स्पष्ट होता है, कि 65 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा ऊनी वस्त्र उद्योग अन्य राज्यों के लिया भेजा जाता है, स्पष्ट है कि मात्र 35 प्रतिशत ग्रामीण समाज लोग बैंक के ऋण लेने से डरते हैं।

तालिका संख्या–5: ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक ऋण लिया जाता हैं ?

क्र0सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	15	75
2	नहीं	5	25
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–5 से स्पष्ट होता है, कि 75 प्रतिशत उत्तरदाता ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक श्रण लिया जाता हैं। मात्र 25 प्रतिशत लोग ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए बैंक ऋण नहीं लिया जाता हैं, अतः स्पष्ट है, कि ग्रामीण समाज के लोग बैंक ऋण लेने से डरते हैं।

तालिका संख्या– 6: ऊनी उद्योग में किस तकनीकि का प्रयोग करते है ?

क्र0सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	परम्परागत	04	20
2	आधुनिक	16	80
योग		20	100

Source: On the Basis of Field Survey

उपर्युक्त तालिका संख्या–6 से स्पष्ट होता है, कि 80 प्रतिशत उत्तरदाता ऊनी वस्त्र उद्योग के लिए आधुनिक तकनीकि का प्रयोग करते है।

चित्र–1: गांव की ऊनी वस्त्र बनाने की मशीन

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आंकड़ों को प्राप्त करने हेतु प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध कार्य की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुसार विभिन्न प्रकार के आंकड़ो की आवश्यकता होती है। स्थानीय संसाधनों पर आधारित विशेष क्षेत्र का प्रबन्धन के माध्यम से स्थानीय ग्रामीण लोगों का आजीविका एवं रोजगार के साधन जुटाना है। क्षेत्र में स्थानीय संसाधनों का सतत् विकास एंव प्रबन्धन (Sustainable Development and Management of Rseource) के लिए लघु व कुटीर उद्योंगों का विकास व्यक्तिगत एंव सरकारी तौर पर भी चलाए जा सकते हैं। यहां कम्बल उद्योग, एवं करघा निर्मित कम्बल एंव उनी वस्त्र उद्योग का भी वर्णन किया गया है, जिसकी सहायता से स्थानीय लोगों की आजीविका में सुधार आयेगा। अध्ययन क्षेत्र में गैर–परम्परागत उद्योग जैसे, कुक्कुट–पालन, मशरूम उत्पादन, अंगौरा, खरगोश पालन तथा रेशम उत्पादन आदि विकसित करके स्थानीय लोगों की अर्थव्यवस्था में सुधार आयेगा। वर्तमान स्थिति में सुधार करने के लिये उद्देश्यों समूह हेतु स्थानीय प्रशिक्षण, जागरूकता क्षमता निर्माण के लिए उपयुक्त तकनीकी और प्रथाओं का प्रदर्शन व तत्काल आवश्यकता है, और उद्योगों का भी विकास करना चाहिए, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अच्छे अवसर बन सकते हैं, तथा इससे स्थानीय लोगों को रोजगार व आजीविका के साधन उपलब्ध होगें।

सन्दर्भ (References)

1. राणा जयपाल, (2004), जौनसार–बावर दर्शन कनाट प्लेस देहरादून।
2. एडकिन्सन, एडविन्न टी0 (1998½] ^हिमालय गजेटियर, उतरायण प्रकाशन हिमालय संचेतना आदिबदरी, चमोली सरस्वती प्रेस।
3. शाह टीकाराम, (2016), 'जौनसारः–बाबर समाज संस्कृति और इतिहास बिनसर पब्लिकेशन देहरादून।
4. प्रसाद गायत्री (2000), 'सांस्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
5. जैन, शशी (1981), 'ग्रामीण समाजशास्त्र रिसर्च पब्लिकेशन नई दिल्ली।
6. जोशी हेमलता, भगोरा आर0एल0 (2000), 'जनजातियो का भौगोलिक अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा0 लि0 जयपुर।
7. गुप्ता, एम0एल0डी0डी0 शर्मा, (1990), 'भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र; साहित्य भवन, आगरा।
8. कौशिक, एस0डी0 (1968), 'मानव भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।
9. नौटियाल, शिवानन्द (1991), 'उत्तराखण्ड की जनजातिया सुलभ प्रकाशन, नई दिल्ली ।
10. शर्मा, वी0डी0 (1979), 'आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचना।